ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

किशोर एवं सामान्य किशोरों में सुरक्षा की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Studies of Adolescents And General Adolescents In Terms of Safety

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 27/11/2020, Date of Publication: 28/11/2020

राजीव कुमार सिह
सहायक प्राध्यापक,
कला विभाग,
एस.एस.डी.सी.
कानपुर, यू.पी., भारत

सारांश

इस विश्व में मानव एक ऐसा प्राणी है जो पूर्ण चेतना माना गया है चेतना का तात्पर्य है कि मनुष्य प्रकृति की भॉति अन्य वस्तुओं में आानी है। उसमें बोलनें समझनें की भाषा अलग है यहॉ तक की अपनें ज्ञान और चिन्तन के द्वारा मनुष्य नें प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। अपनी रूचि व इच्छा के अनुसार प्रकृति को देखता है। जब मनुष्य को अपनी अर्न्तनिहित शक्तियों को पूर्ण रूप से विकसित हाोनें का अवसर मिलता है तभी उसके व्यक्तित्व का विकास भी उसके क्षमतानुसार होता है। अतः तमाम शक्तियों को विकसित करनें का माध्यम शिक्षा ही है।

अस्तु शिक्षा मनुष्य के पारस्परिक एवं बाह्य वस्तु जगत के साथ निरन्तर अन्तःक्रिया का परिणाम है। अतः क्रिया आदिकाल से मानव के धरती पर अवतरण के साथ आरम्भ हुई है। वर्तमान समय में प्रत्येक शिक्षाशास्त्री व मनोवैज्ञानिक इस तथ्य से पूर्णरूपेण परिचित है परन्तु पिता की योजन तथा भाग्य की विडम्बना से इस संसार में अनेक युवक व युवतियां ऐसी भी हैं। जो माता पिता के प्यार व दुलार से वंचित रह जाते हैं अतः उनके अभाव में उनके व्यक्तितत्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता यद्यपि माता पिता अपनें बालकों को चाहे जितना कम समय दें अथवा वे बालको का उत्तम विकास की प्रक्रिया से अनभिज्ञ ही रहते हैं।

In this world, human being is such a creature, which is considered to be full consciousness. Consciousness means that human beings have to come in other things like nature. Speak in it, understand that the language is different here, even by your knowledge and thinking, man has conquered nature. Looks at nature as per his interest and desire. When a man gets an opportunity to develop his fully developed powers, then his personality also develops according to his ability. Therefore, education is the medium to develop all the powers.

Astu education is the result of constant interaction with man's mutual and external objects. Hence, the verb has started from the beginning with the human's descent on the earth. At present, every educationist and psychologist is fully aware of this fact, but due to the father's plan and irony of fate, there are many young men and women in this world. Those who are deprived of love and affection of the parents, so their personality is not fully developed in the absence of them, although the parents give themselves as little time as possible or they remain ignorant of the process of child development.

मुख्य शब्द : किशोर एवं सामान्य किशोरों, सुरक्षा, मनोवैज्ञानिक, व्यक्तितत्व।
Adolescents and General Adolescents, Security, Psychological, Personality.

प्रस्तावना

शिक्षा जन्मजात शक्तियों के प्रकटी करण की प्रक्रिया है जिसके लिए श्रेष्ठतम वातावरण की आवश्यकता होती है। (शोधकर्ता के अनुसार)

शिक्षा बालक के अन्तरित वाह्य प्रकाशन की प्रक्रिया है। (फ्रोबेल के अनुसार)

अध्ययन के उद्देश्य

1. किशोरों को जो सुविधायें अपनें माता पिता के साथ रहते प्राप्त होती हैं वह अनाथ किशोरों को नहीं।
2. सामान्य किशोरों की सुरक्षा की दृष्टि से उनके साथ माता–पिता होते हैं। बल्कि अनाथ किशोरों की सुरक्षा की दृष्टि से वह अत्यधिक गम्भीर रहते हैं।
3. अध्ययन की परिकल्पना– 1. कानपुर नगर के किशोरों एवं अनाथ किशोरों तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों की सुरक्षा व असुरक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कानपुर नगर के किशोरों व कानपुर देहात के अनाथ किशोरों की सुरक्षा व असुरक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना के प्रकार

1. सकारात्मक परिकल्पना
2. शून्य परिकल्पना
3. सर्व भौमिक परिकल्पना

परिसीमन

प्रस्तुत शोधकर्ता नें कानपुर नगर के किशोरों एवं कानपुर देहात के अनाथ किशोरों का अध्ययन किया है क्योंकि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के किशोरों एवं अनाथ किशोरों को इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोधकर्ता नें कुल 800 का न्यायदर्श कर लिया है। अनुसंधानकर्ता नें अपनें अनुसंधान हेतु कुल 800 का न्यायदर्श लेगा, जिसमें 400 किशोर कानपुर व 400 किशोर कानपुर देहात के हैं।

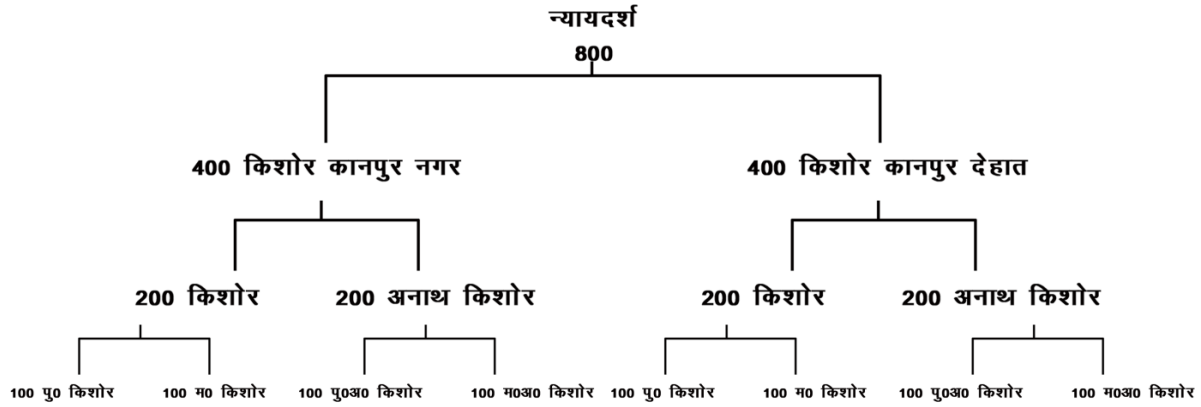

उपकरण

शोधकर्ता नें किशोरों व अनाथ किशोरों की सुरक्षा व असुरक्षा को मापनें के लिए डा0 गोविन्द तिवारी व डा0 एन0एम0 सिंह द्वारा निर्मित सुरक्षा व असुरक्षा का प्रयोग किया है।

प्राप्त आकड़ों का सांख्यिकी गणनाः– शोधकर्ता नें आकड़ों को जाननें के लिए समान्तर माध्य मानक विचलन व क्रान्तिक निष्पत्ति तथा टी– टेस्ट का प्रयोग किया है।

तालिका–1

किशोरो के प्रकार	सहमत			असहमत			अनिश्चित		
	समान्तर माध्य	मानक विचलन	दोनों में अन्तर	समान्तर माध्य	मानक विचलन	दोनों में अन्तर	समान्तर माध्य	मानक विचलन	दोनों में अन्तर
कानपुर नगर के किशोरों व अनाथ किशोरों	29.75	2.37	3.66	28	1.83	0.155	12.25	2.5	0.175
कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों	29.25	2.22		30.25	2.52		10.5	2.47	

कानपुर नगर के किशोरों व अनाथ किशोरों को तालिका 01 में दर्शाया गया है। हॉ मत में कानपुर नगर किशोरों व अनाथ किशोरों का मध्यमान 29.75 तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों का मध्यमान 29.25 है। असहमत मत के अनुसार कानपुर नगर किशोरों व अनाथ किशोरों का मध्यमान 28 तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों का मध्यमान 30.25 है। तथा अनिश्चित में कानपुर नगर किशोरों व अनाथ किशोरों का

मध्यमान 12.25 तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों का मध्यमान 10.5 है।

तालिका–2 कानपुर नगर के किशोरों व अनाथ किशोरों तथा कानपुर देहात के किशोरों व अनाथ किशोरों का प्रसरण

Signification level of 148 Degree of Freedom	Yes		No		None Of these	
	Critical Ratio	T-Value	Critical Ratio	T-Value	Critical Ratio	T-Value
	3.0678	0.02	14.44	14.45	9.96	9.8
0.1	Significat	Significat	Significat	Significat	Significat	Significat
0.5	Significat	Significat	Significat	Significat	Significat	Significat

निष्कर्ष

उपरोक्त सारणी के अनुसार स्पष्ट है कि हॉ मत और न मत में 0.1 व 0.5 स्तर पर क्रांतिक निष्पत्ति महत्वपूर्ण तथा टी वैल्यू भी महत्वपूर्ण है तथा दोनों में प्राप्त परिणाम में अन्तर महत्वपूर्ण है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सुझाव

1. अनाथ बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर अनुसंधान किया जा सकता है।
2. बालक व अनाथ बालकों की सामाजिक व आर्थिक स्थति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Agrawal J.C (1995) development and planning of modern education, New Delhi Vikas publishing house, .p.518*
2. *Agrawal J.C (1994) educational administration management and supervision New Delhi Arya book report p 406*
3. *Agrawal Alka (1989) study of managerial style of principle of degree colleges affiliated to merath university in relation to teacher Alienation model and institutional effectiveness Phd education modern university*
4. *Afquei Rehana (1995) principals leadership style and teachers satisfaction in school organisation M.ed Desser,CSJM Kanpur.*
5. *Ash.Ruth and Maurice .P . the principal as chief learning officer the New York of formative leadership.*
6. *http://diserver.samford.edu*
7. *Asthana J.S and R.S Mishra (1990) Educational Administration, Kanpur, MM Publication Vol.2 p.80*